अध्यात्म से राष्ट्र उत्थान–श्रीमद्भगवद गीता के परिप्रेक्ष्य में एक अध्ययन

शोधार्थी – धर्मवीर यादव

शोध निर्देशक – डॉ सोमवीर आर्य

शोध संक्षेप :–भारत भूमि सदा से ही त्यागी, तपस्वी, योगी एंव साधु संतो की भूमि रही है। भारत देश के लोग सदा से ही संस्कारित आध्यात्मिक एवं उच्च आदर्शो का जीवन जीते आ रहे है। अध्यात्म के मार्ग पर जब कोई भी राष्ट्र चलता है तो वह राष्ट्र बहुत कम समय में विश्व पटल पर अपनी अलग पहचान बना लेता है। अध्यात्म से ही राष्ट्र का निर्माण होता है और राष्ट्र से ही अध्यात्म विकसित होता है। अध्यात्म से ही राष्ट्र के नागरिकों में नैतिक, चारित्रिक, शरीरिक, मानसिक, भावनात्मक शक्ति का समावेश होता है।अध्यात्म से देश के नागरिकों में राष्ट्रीय भावना विकसित होती है। सांसारिक दृष्टि में समस्याओं, उलझनों, बाधाओं, दुःख–द्वंद्वों को मिटाने के दो ही मार्ग है– एक भौतिक और दूसरा आध्यात्मिक। गीता में आध्यात्मिक मार्ग पर बल दिया है। आध्यात्मिक मार्ग पर चलकर ही व्यक्ति को अपने निहित आन्तरिक सुप्त शक्तियों का आभास होता है। दुनिया के महान वैज्ञानिक अल्बर्ट आइंस्टीन से जीवन के अन्तिम क्षणों में पूछा गया की अगले जन्म में क्या नई खोज करेगें, उन्होने कहा यदि भगवान मुझे आग जन्म देता है तो मै अपने अन्दर की खोज करूंगा। भौतिक रूप से तो मैने अनेक खोज की है लेकिन अगले जन्म में ईश्वर की अमूल्य देन इस शरीर में निहित आंतरिक शक्तियों या अध्यात्म की खोज करूंगा।श्रीमद्भगवद्गीता में अर्जुन को जो अध्यात्म का प्रसाद स्वरूप ज्ञान भगवान श्रीकृष्ण ने दिया था वह आध्यात्मिक ज्ञान आज प्रत्येक मनुष्य को अति आवश्यक है। गीता का अध्यात्म कर्म की भूमि पर समता एवं समन्वय के प्रसार में नैतिकता के निश्छल वातावरण में विकसित होता है।

अध्यात्मः– अध्य+आत्म दो शब्दों के मेल से बना है अध्यात्म अर्थात स्वंय का अध्ययन करना ही अध्यात्म है। स्वंय को जानना, मनाना और दर्शन करना ही अध्यात्म ही है। स्वयं के अध्ययन या जानने के लिए व्यक्ति को किसी भी प्रकार की पूजा–पाठ की आवश्यकता नही है। मन्दिर, मस्जिद, गुरूद्वारे या चर्च में भी जाने से अध्यात्म का मूल स्वरूप अधूरा ही रह जाता है। अध्यात्म परमार्थ ज्ञान है। आत्मा–परामात्मा संबंधी ज्ञान है। आत्मा में चैतन्य नामक विशेष गुण है। आत्मा में जानने की शक्ति है। आत्मा के द्वारा जीव को अपने अस्तित्व का बोध होता है। ज्ञान का मूल स्त्रोत आत्मा ही है। भारतीय धर्म ग्रंथ मूलतः अध्यात्म से परिपूर्ण है। वेद, उपनिषद, पुराण, संहिता दर्शन, स्मृति, आगमन, रामायण, महाभारत, गीता आदि सभी धर्म ग्रन्थों का मुख्य विषय अध्यात्म ही है।[3]स्वामी दयानन्द से भी जब तक एक बार पूछा गया कि अध्यात्म की ताकत क्या है? तब स्वामी दयानन्द ने कहा था कि ''पहाड़ जैसी विपदा आने पर भी आध्यात्मिक व्यक्ति विचलित नही होता है।'' अध्यात्म की प्रेरणा भी पूरी वसुंधरा को परिवार मानकर चलने की है। ''**वसुधैव कुटुंबकम**'', ''**सर्व खल्विदं ब्रहमा**'', ''**आत्मैवेदं सर्व**'' आदि उक्तियों में अपनी चेतना और भावना को विश्वव्यापी मानकर चलने तथा उसी तरह रहने का संदेश निहित है।

गीता में अध्यात्मः– भारत का सबसे पवित्र धर्म ग्रन्थ गीता ही हैं। गीता का ज्ञान अध्यात्म का ही ज्ञान है। गीता में आठवें अध्याय के प्रथम श्लोक में अर्जुन भगवान श्रीकृष्ण से पूछते है कि अध्याय क्या है?[4]

किं तद्ब्रहमा किमध्यात्मम किं कर्म पुरूषोतम। (गीता 8/11)

योगेश्वर भगवान श्रीकृष्ण कहते है जो अपने स्वरूप में स्थित हो अर्थात जीवात्मा को ही अध्यात्म कहा है।[5]

अक्षर ब्रहमा परम स्वभावोअध्यात्ममुच्यते । (गीता 8/3)

अध्यात्म की अनुभूति सभी प्राणियों में समान रूप से निरन्तर होती रहती है। परोक्ष व अपरोक्ष रूप से सभी स्वंय की खोज कर रहे है। अध्यात्म ज्ञान स्वंय अंदर से प्रकट होता है। अध्यात्म से व्यक्ति निष्काम कर्म योगी बनता है। आत्मा को केन्द्र बनाकर जो चिंतन और आत्म सुख साधन का प्रयास किया जाता है, वह अध्यात्म है। लेकिन त्रिगुणों में आकर व्यक्ति

अज्ञानता में पड़कर अपने स्वरूप को भूलकर दुःख झेल रहा है। साख्य योगी, आत्मज्ञानी, अध्यात्मवादी साधक सच्चे सुख का अन्वेषण अन्तरात्मा से करता है, भौतिक बाहय सुख– साधनों आदि में नही। वह स्वंय परमात्मा में एककार हो जाता है। वह बाहय् हलचलों, अशान्ति और तनावों से मुक्त हो जाता है।[6]

योअन्तः सुखोअन्तर्रामस्तथान्तज्योतिरेवयः।

सयोगी ब्रहमानिर्वाणम ब्रहमभूतोअधिगच्छति।। (गीता 5/24)

भौतिक विषयों के जो सुख है वे नश्वर और क्षणिक है। ऐसे सुखों में विवेकी, तत्वज्ञानी पुरूष रमण नही करते क्योकि वें अंततः दुःख देने वाले होते है।

ये हि संस्पर्शजा भोगा दुःख योनय एव तें।

आध्यानतवन्तः कौन्तेय न तेषु रमते बुधः।। (गीता 5/22)

अध्यात्म धर्म का प्राण है और गीता एक विशुद्ध आध्यात्मिक ग्रन्थ है।[7]

अध्यात्म और विज्ञानः– अध्यात्म मानकर चलता है जबकि विज्ञान चलकर मानता है। दोनो के मार्ग अलग अलग है लेकिन मजिंल एक है। अध्यात्म और विज्ञान में भिन्नता होते हुए भी एक ही वस्तु के दो छोर है। अध्यात्म का प्रकाश भीतर होता है। विज्ञान की रोशनी बाहर होती है, वह सार्वजनिक है। तथ्य से सत्य को जानना ही विज्ञान है। अध्यात्म रहस्य में प्रवेश है, जो जानने से छूट जाता है उसे जानने की चेष्टा ही अध्यात्म है।[8]सृष्टि के समस्त प्राणियों की पीठ की रीढ़ झुकी होती है। आदमी की पीठ सीधी होती है और उपर जाती है, इसलिए आदमी अध्यात्म और विज्ञान द्वारा व्योमण्ड़ल में परम चरम को खेजता है। विज्ञान की अन्तिम खोज अणु–परमाणु मृत्यु है। जबकि अध्यात्म की अन्तिम खोज आत्मा परमात्मा है। भीतर और बाहर दोनो दिशाओं में अनंत की खोज में दोनों है–अध्यात्म और विज्ञान। विज्ञान को आध्यात्मिक और अध्यात्म को वैज्ञानिक होना पड़ेगा तभी विश्व में समरसता एवं सामजंसय स्थापित होगा। मनुष्य की प्रवृतियां दो दिशाओं में गति करती है एक अंतर्मुखी और दूसरी बहिर्मुखी। इस अंतर्मुखी दृष्टि को अध्यात्म कहा जाता है और बहिर्मुखी प्रयोजनों को विज्ञान का नाम दिया गया है। इस प्रकार अध्यात्म और विज्ञान का सदैव एक ही लक्ष्य रहा है, दिशा एक रही है, जन्म एक साथ हुआ, विकास, परिवर्तन और निष्कर्षो की गति भी एक ही रही है। वस्तुतः अध्यात्म और विज्ञान एक दूसरे के पूरक, सत्य की खोज में एक ही अस्तित्व को बढे हुए दोनो हाथ है। दोनो में तात्विक दृष्टि में कोई विरोधाभास नही है।

धर्म और अध्यात्मः– धर्म और अध्यात्म प्रत्येक मनुष्य के अंतरंग विकास मार्ग के आधार स्तम्भ है। वास्तु का स्वभाव ही उसका धर्म है, चाहे वह वस्तु जड़ हो या चेतन। वस्तु का उसके मूल स्वभाव में रहना ही उसका धर्म है। जैसे जड़ जगत में अग्नि का स्वभाव है गर्माहट और पानी का स्वभाव है शीतलता सूर्य का स्वभाव है तपन, चन्द्र का स्वभाव है। सौम्यता वैसे ही चेतन जगत में आत्मा और परम आत्मा का स्वभाव है सत–चित आनंद।अकारण बहता आनंद मनुष्य का वास्तविक स्वरूप है और इसकी अनुभूति करने का मार्ग ही धर्म का मार्ग कहा जाता है। सम्प्रदाय धर्म का बाहय स्वरूप है। परन्तु अध्यात्म उसकी अंतरंग दृष्टि है जिसमें गुण विकास का मार्ग और आत्म अनुभूति का स्वाद है। बाहरी धर्म कर्मकांड है, भीतरी धर्म अध्यात्म हे। अपने कर्तव्यों का निर्वाहन करना धर्म है और परम चेतन को अनुभव करने की ललक आध्यात्मिकता है। जो आध्यात्मिक होता है वो धार्मिक भी होता है और जो धार्मिक होता है वह धीरे धीरे आध्यात्मिक बन जाता है।[9]

अध्यात्म एवं राष्ट्रः– त्याग, तपस्या और बलिदान की भावना अध्यात्म से ही पैदा होती है, जो देशभक्ति को भी जन्म देती है। अध्यात्म के बल पर ही हम एक सूत्र में बंधकर देश हित में कार्य कर सकते है। ईर्ष्या, धृणा, द्वेष की भावना रखने से आपसी संबंध टूट जाते है। जो देश व समाज की उन्नति में बाधक है। जिस देश के लोग देशभक्त होते है। वहाँ के लोगो का जीवन सुखपूर्वक, आनंदमय, समृद्ध होता है।[10]

''जय हे जागती के प्रथम राष्ट्र–अध्यात्म ज्ञान के अमर राष्ट्र''

अध्यात्म जीवन को सुचारू रूप से चलाने की वैज्ञानिक पद्धति है। अध्यात्म मानव जीवन के चरमोत्कर्ष की आधारशिला है, मानवता का मेरूदण्ड़ है। अध्यात्म के मार्ग पर चलकर व्यक्ति कभी भी हताश, निराश, नकारात्मक, कामुक, कायर का जीवन न जीकर बल्कि उत्साह, आनंद, सकारात्मक, दिव्य एवं ओजपूर्ण जीवन जीता है। अध्यात्म के मार्ग पर चलकर व्यक्ति मानव से महामानव बन जाता है। अध्यात्म से व्यक्ति में आपसी भाईचारे, प्रेम, सौहार्द के गुण विकसित होते है। जिससे सामाजिक समरसता से लेकर राष्ट्रीय प्रेम प्रस्फुटित होता है। राष्ट्रीय भावना से ओतप्रोत व्यक्ति में स्वतः ही अध्यात्म के संस्कार जागृत होते है। वह व्यक्ति प्रत्येक कार्य को मानव कल्याणार्थ करता है। जिस राष्ट्र के लोग आध्यात्मिक है उस राष्ट्र में संस्कार, सभ्यता, संस्कृति के गुण स्वसंचालित होने लग जाते है। राष्ट्र के नियमो से ही आध्यात्मिकता विकसित होती है। आध्यात्मिकता से ही राष्ट्र के वास्तविक स्वरूप का ज्ञान होता है।

निष्कर्षः– अध्यात्म राष्ट्र का प्राण है। अध्यात्म में भौतिक और आध्यात्मिक विचारो की उन्नति की धाराएं एक साथ ही चली है। वर्तमान में नव सांस्कृतिक धार्मिक पुर्नजागरण की आवश्यकता है। गीता जीवन जीने की सम्पूर्ण कला सिखाती है। तत्वज्ञान के रूप में वैचाारिक पोषण के साथ ही गीता व्यवहारिक पोषण भी देती है। गीता कोई पूजा–पाठ की पद्वति, किसी धर्म सम्प्रदाय का प्रतिनिधित्व नही करती अपितु गीता का ज्ञान सार्वभौमिक वैज्ञानिक व मानव के कल्याण के लिए है। गीता की उपयोगिता जितनी प्राचीन काल में थी उतनी ही वर्तमान काल में है और भविष्य में भी रहेगी। गीता लोक और परलोक दोनो पर समान दृष्टि रखती है। गीता में अध्यात्म के साथ मुख्यतः ज्ञान, कर्म, भक्ति की चर्चा हुई है। भगवान श्री कृष्ण ने अर्जुन को माध्यम बनाकर गीता में जो आध्यात्मिक अभिप्रेरित का संदेश दिया था। वो संसार के समस्त मानव के कल्याण के लिए था। आज हमें निःक्षेय एवं अभ्युदय अर्थात आध्यात्मिकता एवं आधुनिकता दोनो को साथ लेकर चलना पडेगा तभी सचे अर्थो में राष्ट्र का उत्थान होगा। [11]

सन्दर्भ :

1. अध्यात्म और विज्ञान–जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय, लाडनूं
2. अध्यात्म क्या था? क्या हो गया है? क्या होना चाहिए? – आचार्य श्रीराम शर्मा
3. दर्शन, धर्म–अध्यात्म और संस्कृति– ड़ॉ देवराज
4. गीता ज्ञान दीपिका–देवीसहाय पाण्डे दीप (पृष्ठ 61)
5. गीता ज्ञान दीपिका–देवीसहाय पाण्डे दीप (पृष्ठ 201)
6. श्रीमद्भगवद्गीता गीतामृत–दिव्य प्रकाशन हरिद्वार (पृष्ठ 151,152)
7. श्रीमद्भगवद्गीता यथारूप– भक्तिवेदांत स्वामी प्रभुपाद
8. धर्म और विज्ञान विरोधी नही पूरक है– पण्डित श्रीराम शर्मा
9. धर्म और विज्ञान विरोधी नही पूरक है– पण्डित श्रीराम शर्मा (पृष्ठ 3)
10. आचार्य चाणक्य–राष्ट्र सृष्टा एंव भविष्य दृष्टा– डॉ ऊषा अग्रवाल
11. धर्म और विज्ञान विरोधी नही पूरक है – पण्डित श्रीराम शर्मा (पृष्ठ 41–41)